डायमण्ड कॉमिक्स

M-26 2.50

महाबली शाका और शहर का शैतान

डायमंड कामिक्स में

महाबली शाका

कोहिमा के वीरहो का रक्षक महाबली शाका जिसके सरक्षण मे कोहिमा के आदिवासी मनुष्य ही नहीं अन्य वन्य-प्राणी भी अपने आपको सुरक्षित समझते थे। महाबली शाका की निरन्तर निगरानी के बाद भी अगर वीरहो मे कोई दुर्घटना घटती या कोई अन्य समस्या उत्पन्न होती तो महाबली शाका को बुलाया जाता था। या फिर आदिवासी नाग की गुफा पर आकर, गुफा के पहरी काले नाग को अपने ऊपर आयी विपत्ति की सूचना देते थे काला नाग वह सूचना महाबली शाका को देता और महाबली शाका आदिवासियो की मदद के लिये निकल पड़ता।

महाबली शाका के अन्य कॉमिक्स

महाबली शाका और पाताल दानव	5.00
महाबली शाका और रहस्यमय नगरी	5.00
महाबली शाका और नाग मन्दिर	5.00
महाबली शाका और शैतान भिखारी	5.00
महाबली शाका और नाग का खजाना	5.00
महाबली शाका और भूखे भेड़िए	5.00
महाबली शाका और अफ्रीका का दैत्य	5.00
महाबली शाका और पाताल के दानव	5.00
महाबली शाका और खण्डहर का शैतान	4.00
महाबली शाका और मौत का देवता	4.00
महाबली शाका और बौनों का संग्राम	4.00
महाबली शाका और काला बाज	4.00
महाबली शाका और अजनबी शिकारी	4.00
महाबली शाका और स्पाईडर किंग	4.00

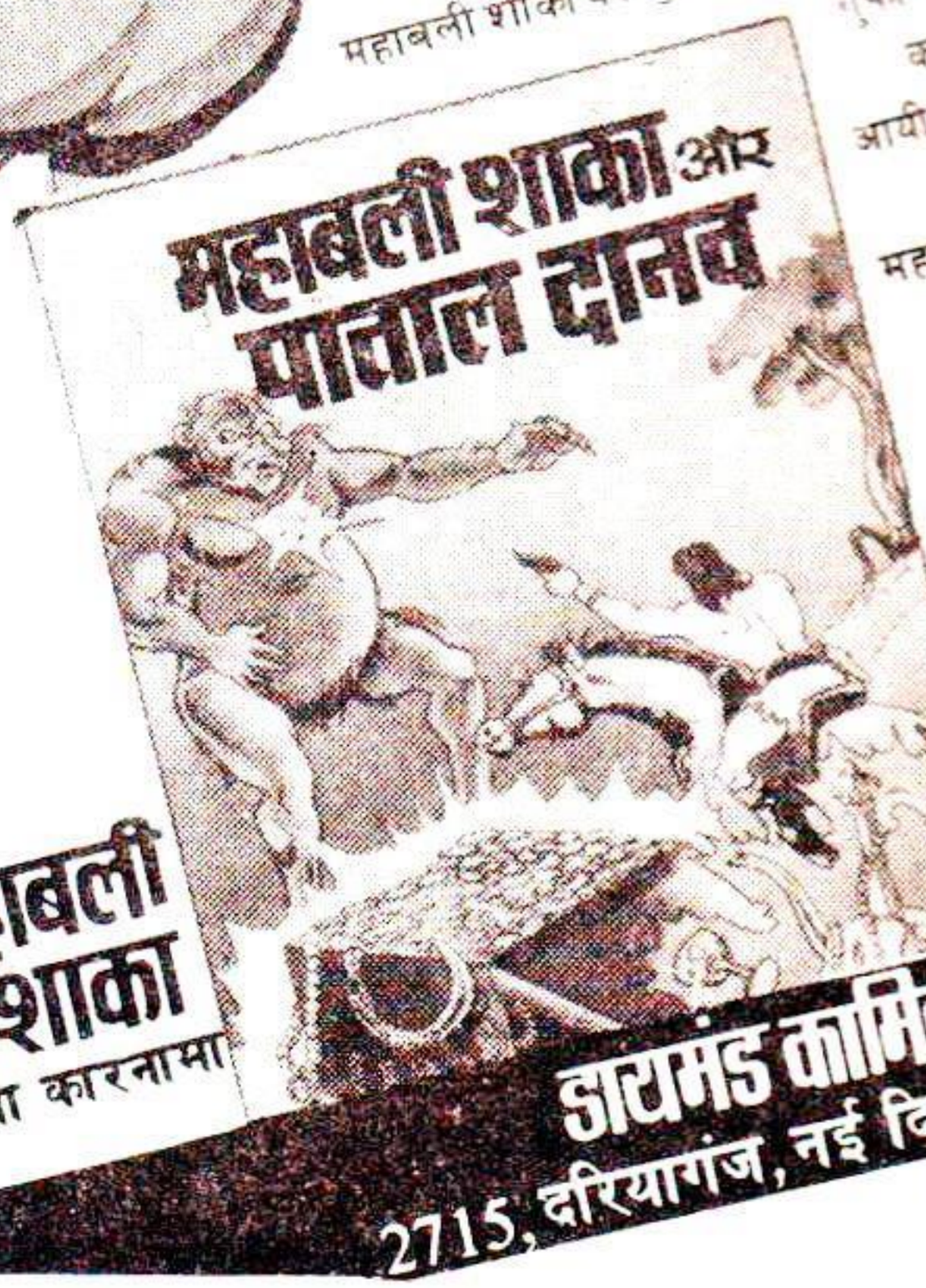

डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

महाबली शाका और शहर का शैतान

सम्पादक - गुलशन राय • लेखक - अश्वनी 'आशू' • चित्र - सुमन

गरुड़गढ़ एक छोटा सा-मगर खुशहाल राज्य था.जो अब से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व कोसिमा के बीहड़ों की दक्षिणी सीमा पर आबाद था.

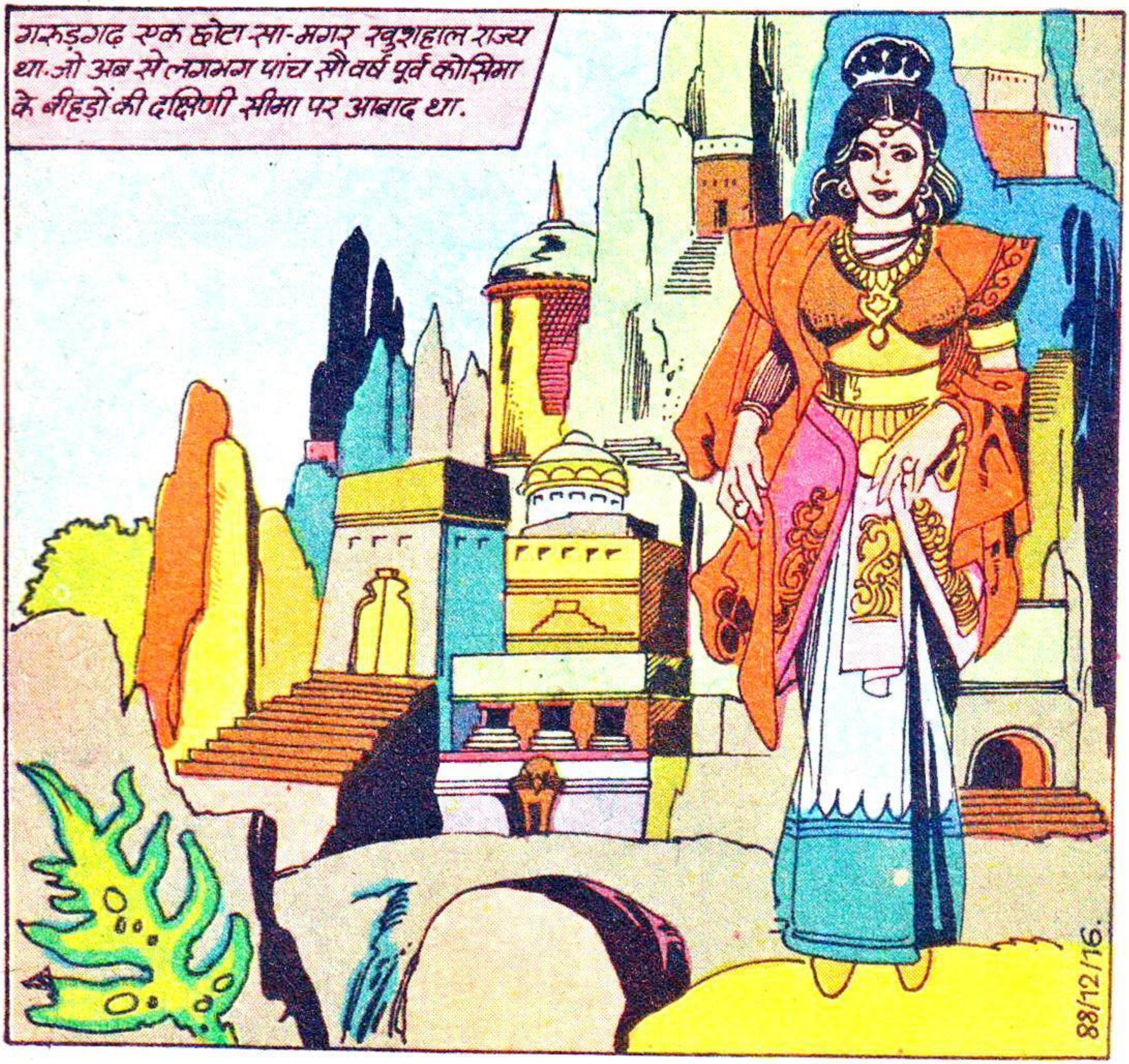

88/12/19.

"...लेकिन पहाड़ों पर बसा होने के कारण गरुड़गढ़ अनाज इत्यादि के मामले में आत्म-निर्भर नहीं था. वह सब उसे दूसरे देशों से आयात करना पड़ता था...

"...हालांकि वहां मौजूद पांच सोने की तथा दो चांदी की खानें गरुड़गढ़ को सम्पन्न तथा खुशहाल बनाए हुऐ थीं...

"...परन्तु यही सोने तथा चांदी की खानें गरुड़गढ़ के लिए अभिशाप भी बनी हुई थी. कारण, इन्हीं पर अधिकार करने के लिए कभी भी कोई देश अपनी विशाल सेना सहित गरुड़गढ़ पर चढ़ाई कर देता था...

"...लेकिन...

...गरुड़गढ़ के राजा सिंहनादसिंह की दूरदर्शिता तथा बुद्धिमानी का सबसे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता था कि आज तक गरुड़गढ़ के किले तक कोई सेना नही पहुंच सकी थी...
आह!

...बल्कि जब भी जिस देश ने आक्रमण किया था- उसे पराजय के साथ ही साथ जान और माल का भारी नुकसान भी सहना पड़ा था...
पराजित सेना का समस्त साजो-सामान गरुड़गढ़ की सेना के अधिकार में आ जाता था.

परन्तु हमेशा इन आक्रमणों से बचाव की तैयारियां करते रहने के लिए विवश गरुड़गढ़ की जनता अपनी अन्य किसी...

...भी दूसरी जरूरत अथवा समस्या पर ध्यान नहीं दे पाती थी. हालांकि किसी भी आक्रमण से गरुड़गढ़ को कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ता था. परन्तु हमेशा आक्रमणों से अपनी सुरक्षा में व्यस्त रहने के बावजूद वहां की जनता की खुशहाली और सम्पन्नता बरकरार रहती थी.

वहां का प्रत्येक धार्मिक अथवा शाही उत्सव भरपूर जोशो-खरोश और धूमधाम से मनाया जाता था. जैसा कि प्रतिवर्ष मनाया...

...जाने वाला राजकुमारी चित्रांगना के जन्म दिन का यह शाही उत्सव जिसमें गरुड़गढ़ की समूची जनता ही नहीं...

"...बल्कि मित्र देशों के राजा-महाराजा राजकुमार, यहांतक कि गरुड़गढ से व्यापार करने वाले व्यापारी तथा गरुड़गढ के राजा सिंहनादासिंह के पूरी दुनिया में फैले मित्र भी शामिल होते थे...

"...और इन सब मित्रों में- राजा सिंहनादासिंह का सबसे घनिष्ट मित्र कोसिमा के बीहड़ों का बेताज बादशाह महाबली शाका भी पूरे उत्साह के साथ शामिल होता था.

"...जो हमेशा की भांति इस वर्ष भी आया था. तथा जिसकी अगवानी परम्परागत शाही अंदाज में हो रही थी.

शाका के स्वागत में राजा सिंहनाद सिंह तथा संसार की अनुपम सुन्दरी राजकुमारी चित्रांगना भी मौजूद थी
आपका आगमन समूचे गरुड़गढ़ के लिए सदैव मंगलकारी रहा है महाबली।
राजकुमारी महाबली शाका के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से इतना अधिक प्रभावित थी कि...
...वह महल के ऐश्वर्यशाली जीवन का मोह त्याग कर शाका की जीवन संगिनी बनकर उसके साथ जंगल में ही रहना चाहती थी...
चित्रांगना आपको शत-शत प्रणाम करती है।
...पिता की सहमति प्राप्त करने के पश्चात अपने पिछले जन्मदिन के उत्सव पर गरुड़गढ़ की जनता तथा देश-विदेश से आए मेहमानों के समक्ष वह अपनी इस...

...इच्छा को व्यक्त भी कर चुकी थी. जिसे सुनकर उससे विवाह के इच्छुक व्यक्ति निराश हो गए थे.

और अपने हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा और स्नेह सहित मैं तुम्हारे जन्म दिन पर तुम्हें कोसिमा के बीहड़ों के उन दुर्लभ फूलों का गुलदस्ता भेट करता हूं. जिनकी सुगन्ध कभी समाप्त नही होती.

अभी चूंकि राजकुमारी चित्रांगना के जन्म दिन पर आयोजित किए गए समारोह के आरम्भ होने में विलम्ब था. इसलिए शाका और गरुड़गढ़ के महाराज एकान्त में बातें करते रहे.

महाबली... तुम्हारे आगमन की खुशी में मैं तुम्हें एक खुश-खबरी तो सुनाना ही भूल गया था कि...

... विक्रमगढ़ के वर्तमान नरेश प्रतापसिंह ने सदियों पुरानी शत्रुता भुला कर अभी पिछले ही सप्ताह हमारे पास मित्रता का पैगाम भेजा है...

...फिर हमने भी न केवल उनकी मित्रता का पैगाम स्वीकार किया बल्कि उन्हें आज के समारोह में आमंत्रित भी कर लिया.

... वह कल शाम ही यहां पहुंच गए थे. आओ उनसे मैं तुम्हारा परिचय कराऊं.

अवश्य... उनसे मिल कर मुझे प्रसन्नता ही होगी.

लेकिन मैं उनसे हृदय की यह भावना कैसे प्रकट करूं राजा सिंहनादसिंह कि विक्रमगढ़ के नरेश प्रतापसिंह जैसे मक्कार तथा मित्र की पीठ में छुरा घोंपने वाले इंसान की खाल में छुपे एक शैतान ने मित्रता स्वीकार कर ली है.

!?

और उसकी मित्रता स्वीकार करने से भी ज्यादा बड़ी गलती आपने यह भी की कि उस दुष्ट को अपने किले में बुला लिया. जो कि राजकुमारी चित्रांगना पर पहले से ही बुरी नजर रखे हुए है. और निश्चित है कि उस भेड़िए ने यहां किसी पर बुरी दृष्टि डाली तो मैं उसकी आंखे हीं निकाल लूंगा.

और फिर उस अतिथिशाला में जहां अन्य देश के राजा-महाराजाओं के साथ विक्रमगढ़ का राजा प्रतापसिंह भी एक विशाल कक्ष में ठहरा हुआ था.....

आइए महाराज पधारिए.

आप ही हैं विक्रमगढ़ के महाराज प्रतापसिंह?

और आप हैं संसार के महानतम योद्धा- जंगल सम्राट महाबली शाका... और मेरे भावी दामाद:

ओह...! ज...जंगल सम्राट महाबली शाका.

स्वागत है. आपका भी स्वागत है. महाबली शाका. आपसे मिल कर मैं हार्दिक प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं कृपया पधारिए.

राजा सिंहनाद के साथ आए जंगल सम्राट महाबली शाका के असाधारण व्यक्तित्व को देखते ही राजा प्रतापसिंह थर्रा गया. जबकि अभी वह उसका परिचय तक नहीं जान पाया था.

मुझे भी आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई.
जबकि सच यह है कि इस समय इसके हृदय में मेरे प्रति संसार की सारी नफरत भरी हुई है. जिसे न तो इसकी दिखावटी मुस्कराहट छुपा पा रही है और न ही इसकी आंखें
महाबली शाका और राजा सिंहनाद मक्कार राजा प्रतापसिंह से मामूली औपचारिक वार्तालाप के पश्चात वहां से विदा हो लिए.
विक्रमगढ़ का यह नरेश मुझे बहुत समझदार मालुम पड़ता है. तभी इसने मित्रता का हाथ बढ़ाया है. चूंकि शत्रुता निभाने में इसे कभी कोई लाभ नहीं हो सकता.
अ... हां...
यह आपका विचार है जबकि...
... शाका छल-कपट और फरेब की राजनीति से सदा दूर रहता था.
इसके होंठों पर सजी दोस्ताना मुस्काहट सिर्फ दिखावा थी. मैंने उसकी आंखों में महादुष्ट और चालाक भेड़िए जैसी चमक देखी. जो स्पष्ट बता रही थी कि वह यहां...
... निश्चित रूप से अपने किसी मक्कारी भरे शैतानी इरादे के साथ आया है. मैं उसकी ओर से सावधान रहूंगा. और इसके साथ ही...
... महाराज को भी कुछ अतिरिक्त सावधानियां बरतने की ओर संकेत कर दूं.

महाराज, मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया राजभवन की सुरक्षा के कुछ अतिरिक्त प्रबन्ध करवा दीजिए.
अतिरिक्त सुरक्षा प्रबन्ध... ल... लेकिन क्यों महाबली...?
वह यह मानने को तैयार नहीं थे कि राजा प्रतापसिंह के मन में कोई खोट हो सकती है परन्तु महाबली शाका की बात उन्हें माननी ही पड़ी—
ठीक है... महाबली... मैं महल के अतिरिक्त प्रबन्ध करवाए देता हूं.
बाद में महाबली शाका ने स्वयं सुरक्षा प्रबन्धों का जायजा लिया.
अब या तो वह कोई मक्कारी करेगा ही नहीं. और यदि कोई मक्कारी कर भी गुजरा तो वह कम से कम अब छुपी नहीं रह सकेगी.
समारोह के लिए निर्धारित समय से कुछ समय पूर्व जब महाराज सिंहलदासिंह का बुलावा आया तो शाका तैयार था.
कितना अच्छा होता यदि इस बार भी चित्रांगना मेरे साथ ही रथ पर सवार होकर समारोह स्थल...
...पर चलती परन्तु विवाह से पूर्व यहां के रिवाजों के अनुसार किसी...
...भी उत्सव में शामिल होने के लिए राजकुमारी को केवल अपनी सहेलियों के साथ ही जाना होता है

महल के द्वार पर रथ में बैठे राजा-रानी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे.

आज के उत्सव को देखने में निश्चय ही तुम्हें बहुत आनंद आएगा. क्योंकि इसकी तैयारियां विगत कई माह से चल रही हैं.

महाबली शाका के वहां पहुंचते ही रथ समारोह स्थल की ओर रवाना हो गया.

लेकिन समारोह का आरंभ राजकुमारी चित्रांगना के आगमन के पश्चात ही होना था. चूंकि जन्म दिन तो उसी का मनाया जा रहा था.

समारोह स्थल पर राजकुमारी चित्रांगना के पहुंचने का समय हो चुका था.

लेकिन आशा के विपरीत... एक भयानक हैरतअंगेज और दुःखदाई समाचार पहुंचा-

म... महाराज... राजकुमारी साहिबा का अपहरण हो गया.

क... क्या...?

न... नहीं...

जंगल की आग की तरह राजकुमारी के अपहरण का समाचार समारोह में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचा-

यह अनर्थ कैसे हो गया ?.

कौन आततायी फूलों की पंखुड़ियों से नाजुक हमारी राजकुमारी को उठा ले गया.

प्रतापसिंह.

जनता पर दुःख और गम का पहाड़ टूट पड़ा था.

हम सब जानते हैं भाई... कि अगर आततायी राजकुमारी साहिबा को अब तक किले से बाहर ले जा चुका होगा, तो फिर...

उसका लौट आना अरम्भव ही समझें.

दूसरी ओर महाराज सिंहनाद जिनका जिस्म क्रोध-आवेश और अपमान के घूंट भरते हुए तूफानी वेग से महल की ओर लौट चले-

महाबली शाका सहसा ही कहीं गायब हो गया था.

महाबली... अब कैसे लौटेंगे स्वामी महाराज...

उसकी फिक्र मत करो... उसे जहां भी पहुंचना होता है वह पहुंच जाता है.

महाबली शाका को अपने साथ रथ पर मौजूद न पाकर भी उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ था.

महाबली कहां गया होगा. चित्रांगना के अपहरण की खबर ने उसका दिल तो मेरे दिल से भी ज्यादा आवेश और अपमान की आग मे दहका दिया होगा.

कहीं अब कोई ऐसा कदम न उठा बैठे जो खुद उसके लिए मुसीबत बन जाए.

लेकिन जब रथ वापस महल मे पहुंचा तो मुख्यद्वार के रक्षक बेखबर से तो हुए थे. पर ऐसा कुछ नहीं लगता था...

...कि उन्हे किसी प्रकार का कोई युद्ध करना पड़ा था. पर मालुम उन्हे सब था.

यह क्या सुन रहे हैं हम... महल के सुरक्षा प्रमुख नायक सिंह ?

जान बख्शी हो महाराज.. सच तो यही है- कि राजकुमारी साहिबा का अपहरण हो चुका है.

तुमने अपहरणकर्त्ता का पीछा किया था ?

नहीं पीछा करने जैसी कोई बात ही नहीं आप स्वयं चलकर देख लें कि राजकुमारी के अपहरण के लिए शत्रु ने कितनी सूझ-बूझ और चालाकी से काम लिया है.

तभी... बेचैनी से पैर पटकते महाबली शाका के घोड़े पर उनकी निगाह पड़ी-

यह घोड़ा यहां कैसे...? आदरणीय अतिथि- महाबली शाका स्वयं इस घोड़े पर सवार होकर यहां आए थे.

रानी साहिबा... तुम अपने महल में जाओ - हम जानते हैं महाबली शाका कहां गया होगा.

जी... लेकिन जैसे ही उसकी कुशलता का समाचार मिले वह तुरन्त मुझ तक पहुंचा दीजिएगा.

राजा सिंहनाद सिंह सर्व प्रथम राजा प्रतापसिंह के कक्ष में पहुंचे-

आश्चर्य... यहां इस समय उसका एक भी अंगरक्षक मौजूद नहीं है. क्या वह यहां से भाग गया.

गलियारे में मौजूद रक्षकों ने बताया है- आपके यहां से चले जाने के बाद ही कक्ष का दरवाजा बंद हो गया. काफी देर बाद दरवाजा खुला तो बाहर वाले रक्षक भी अन्दर आ गए. और दरवाजा पुनः बंद हो गया था.

सुरक्षा प्रमुख की बात सुनते ही महाराज खिड़की के पास पहुंचकर चौंके -

अरे! यह मज़बूत रस्सी यहां किसने बांधी- अ... और इसका दूसरा छोर राजकुमारी चित्रांगना के महल की खिड़की तक जाता है.

वह तुरन्त राजकुमारी चित्रांगना के कक्ष में पहुंचे- तो उन्हें वहां महल के उन सभी रक्षकों के शव नज़र आए जो राजकुमारी के कक्ष के आस-पास तैनात थे.

महाबली शाका एक घायल सैनिक का सिर गोद में रखे उससे पूछ रहा था.

बन्नू

तुम्हारे जिस्म से बहे खून की एक-एक बूंद का बदला लूंगा, मैं... मुझे बताओ कौन थे वह हमलावर !

खिड़की पर रस्सी की मजबूत सीढ़ी जो सीधे नीचे घाटी में उतरती है-

"जिस पर लटककर वह इस कक्ष में आ गए.

समझ गया. राजा प्रताप तथा उसके जल्लाद अंगरक्षक ने अपने कक्ष की खिड़की पर रस्सी बांध कर किसी प्रकार उस रस्सी का दूसरा सिरा इस कक्ष की बालकोनी तक पहुंचा दिया होगा.

वह राजा प्रतापसिंह तथा उसके कई दर्जन खूंखार जल्लाद-टाइप के अंगरक्षक थे. हमारा टकराव उन्हीं अंग-

रक्षकों से हुआ. प्रतापसिंह अपने दो जल्लादों की मदद से राजकुमारी साहिबा को एक चादर में लपेट कर उनकी गठरी बनाकर उस खिड़की पर ले गया था.

...लेकिन उस बहादुर लड़की चित्रांगना ने उनका मुकाबला किया- चित्रांगना का टूटा हुआ खून में सना हुआ खंजर, उसकी दूर पड़ी वह ढाल...

...इसका प्रमाण हैं. परन्तु आतातई अधिक थे. सो उन पर उसका बस न चला- उल्टे वह आतताइयों के कब्जे में आ गई...

...उन जालिमों ने उसके फूल से कोमल बदन को बेरहमी से चादर में गठरी के सामान की तरह बांध लिया. फिर

...उसे इस रस्सी की सीढी के सहारे बिना किसी की नजर में आए नीचे सैकड़ों फिट गहरी घाटी में ले गए.

मुझे अफसोस है महाबली कि मैंने तुम्हारी बात को इतनी गंभीरता से लिए होता तो शायद यह घटना न घटती.

महाराजा सिंहनाद की बात अनसुनी करके वह बाहर निकल गया.

शाका तुरन्त... अपने चेतक के पास आया-

मित्र वापस जाओ- नीचे घाटी में तुमसे मुलाकात होगी.

घोड़ा आदेश मिलते- पहाड़ के ढलुवां रास्ते की ओर द्रुत गति से दौड़ चला...
...और शाका वापस महल में दाखिल हो गया.
सहसा उसका सामना राजा सिंहनादसिंह से हो गया. जो इस समय अपने सेनापति के साथ क्रोध से फुंकारते चले आ रहे थे.
प्रणाम महाबली !
मैं चित्रांगना को वापस लाने के लिए सेना को हुक्म दे चुका हूं.
सेना! हुक्म ?
महाराज- आपकी सेना एक महीने से पहले विक्रमगढ़ में नहीं पहुंच सकेगी. और इतने समय में तो वह दुष्ट प्रताप-सिंह चित्रांगना से जबरदस्ती विवाह भी रचा चुका होगा.

...फिर तुम्हारे पहाड़ों पर लड़ने में अभ्यस्त सैनिक मैदानी युद्ध में मात खा जाएंगे. और यूं नाहक सैकड़ों सैनिक मौत के घाट उतर जाएंगे.

तो फिर क्या दिल पर पत्थर रख कर बैठ जाऊं मैं.

नहीं, चूंकि यह काम प्रतापसिंह ने अपने बूते पर अपने मुट्ठी भर...

...साथियों के बूते पर किया है. इसलिए... यह काम अब मैं अकेला ही करूंगा. और यह काम करना मुझ अकेले...

...को ही चाहिए. क्योंकि उसने यह जानते हुए भी कि चित्रांगना पर सिर्फ मेरा अधिकार है...

...और उसने शाका का अधिकार छीन कर अब अपनी मौत के फरमान पर दस्तखत कर दिए हैं.

महाराजा सिंहनादसिंह उसे रोकना चाहते थे- लेकिन वह जानते थे कि अब जंगल सम्राट के फैसले को संसार की कोई शक्ति बदल नहीं सकती.

महाराज... विश्वास कीजिए- लौटते समय चित्रांगना मेरे साथ होगी.

फिर वह सैकड़ों फिट नीचे तक लटकी उस रस्सी पर सरपट उतरता चला गया.

हूं...तो वहां उसकी एक छोटी सी सेना डेरा डाले हुए है- ताकि उनका पीछा करते हुए कोई नीचे आ जाए तो उसे फौरन खत्म कर दिया जाए.

तभी शाका ने चेतक को बुलाने के लिए सीटी बजाई.

ही ही ऽऽऽऽ

आओ... चेतक आज तुम्हें इतनी तेज दौड़ना है जितनी तेज तुम आज तक कभी दौड़े नहीं होगे.

और शीघ्र राजकुमारी चित्रांगना का अपहरण करके भागे राजा प्रताप-सिंह के लश्कर द्वारा भूमि पर घोड़े के पदचिन्हों को देखता शाका चेतक को दौड़ाता चला रहा था.

मैं जंगल की ओर से विक्रमगढ की ओर बढूंगा. वह छोटा रास्ता है. जो सिर्फ ...

...मैंने ही देखा हुआ है.

और फिर उसने अपना घोड़ा शीघ्र ही जंगल मे पहुचा दिया.

लेकिन सहसा ही उसने सोचा जिस लश्कर के पदचिन्हो का वह पीछा कर रहा है वह लश्कर प्रतापसिंह का न हुआ तो ?

मुझे पदचिन्हों के आधार पर पीछा नहीं करना चाहिए.

जंगल मे पहुचते ही चेतक भी दुगनी गति से दौडने लगा. इस प्रकार विक्रमगढ की दूरी घटने लगी.

तभी कई घुड़सवार हवा में कोड़े फटकारते हुए एक सड़क से गुजरे.

सड़कें साफ कर दो. महाराज अपनी नई महारानी के साथ विक्रमगढ़ में लौट रहे हैं.

पहले से ही सहमी-सहमी जनता घुड़सवारों को देख-कर भयभीत हो गई है. इसका मतलब जनता अपने राजा से खुश नहीं है.

एक मोड़ पर-

ह... रव... रव... रव...

अचानक ही नीचे से गुजरते घोड़े के पीठ पर से एक सवार गायब हो गया.

राजा प्रतापसिंह महल में कब तक पहुंच रहे हैं?

वह राज्य की सीमा में दाखिल हो चुके हैं और अब पहला घुड़-सवार दस्ता आता ही होगा.

शाका ने उसके जबड़े पर एक शक्तिशाली घूंसा जड़ने के बाद उसे भूमि पर गिर जाने दिया.

फिर तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार होकर महल की दिशा में दौड़ चला.

महल के फाटक में शाका का चेतक तूफानी रफ्तार से दाखिल हुआ-
अरे-रे.... क...कौन है?
एक दुश्मन... हिम्मत है तो आओ मेरे पीछे!
और पलक झपकते ही वह महल में दाखिल हो गया.
आ..ई
आ..ई...!
क...कौन हो तुम?
म...मैं दासी हूं!
तुम अपने राजा के बारे में बताओ... क्या वह महादुष्ट नहीं है. क्या वह जनता का खून चूस कर अपना खजाना नहीं भर रहा.
और क्या उसके महल में एक हजार से अधिक अभागिन रानियां कैद नहीं हैं.
मगर यह तो हमारी नियति है. भाग्य रेखा है. इसे भला कौन बदल सकता है.
कर्म! कर्म से भाग्य रेखा बदली जा सकती है.
तभी रक्षक अंदर आ गए. लेकिन उन दो के मुकाबले में अपनी तलवार खींचना शाका को अच्छा न लगा.
छन
छन

फिर...
ढिशुंग
आह!
अरे! य... यह क्या ?!
न... नाग चिन्ह ! मिटता नहीं... सचमुच का नाग चिन्ह... तो क्या महल में कोसिमा के बीहड़ों का बादशाह महाबली शाका आ गया.
गजब... सैनिकों के जबड़ों पर नाग चिन्ह ! इसका मतलब कोसिमा के बीहड़ों का बादशाह महाबली शाका उनके नगर में आ गया है.
कोई सोच रहा था-
अगर यह वही महाबली शाका हुआ जिसके अनेक किस्से मैंने सुने तो फिर अब यूं समझना चाहिए शहर के उस शैतान की मौत आ गई जिसे हम नहीं- हमारी विवशता प्रतापसिंह महाराज कहती है.

अब हालात यह थे कि महल के सैनिक भयग्रस्त थे· रानियां खुश थीं, कि अब उन्हें हरम की कैद से छुटकारा मिलेगा.

उन्हीं में से एक हंसती-इठलाती दासियों ने फूलों की सुहाग सेज सजाई.

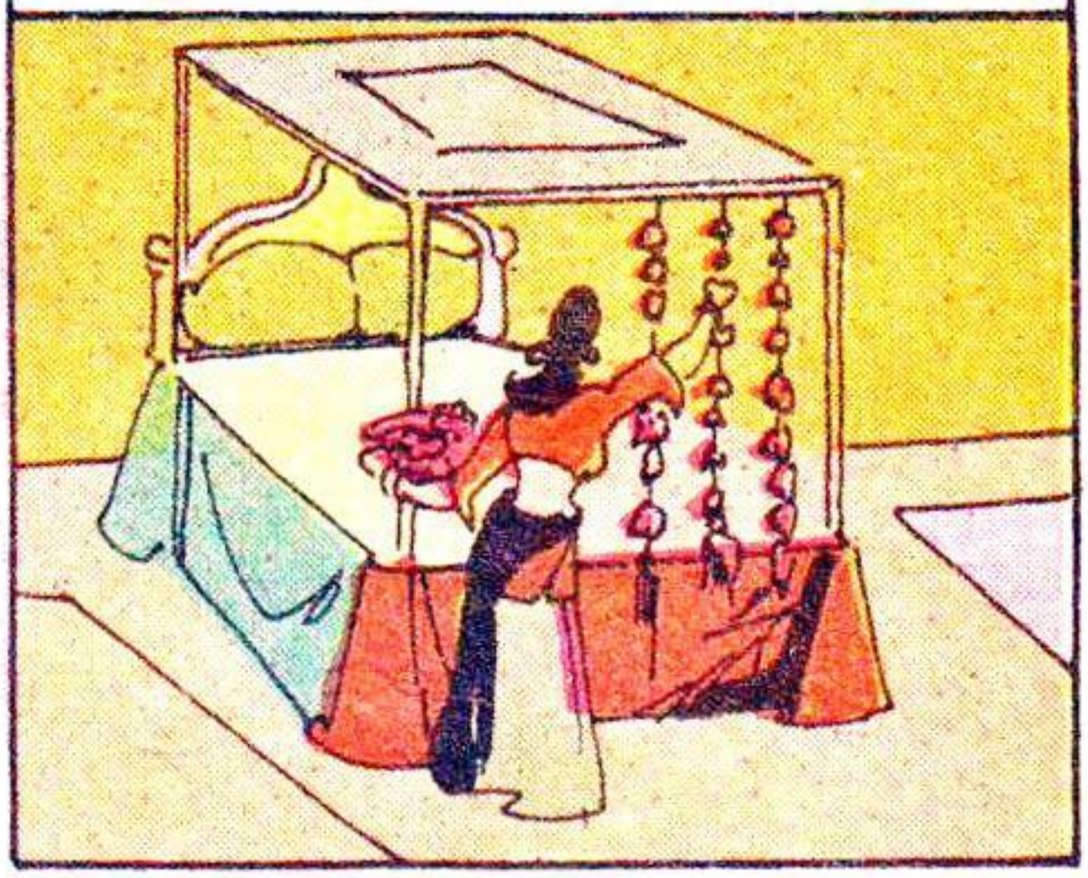

फिर महाराजाधिराज प्रतापसिंह महान का आगमन हुआ.

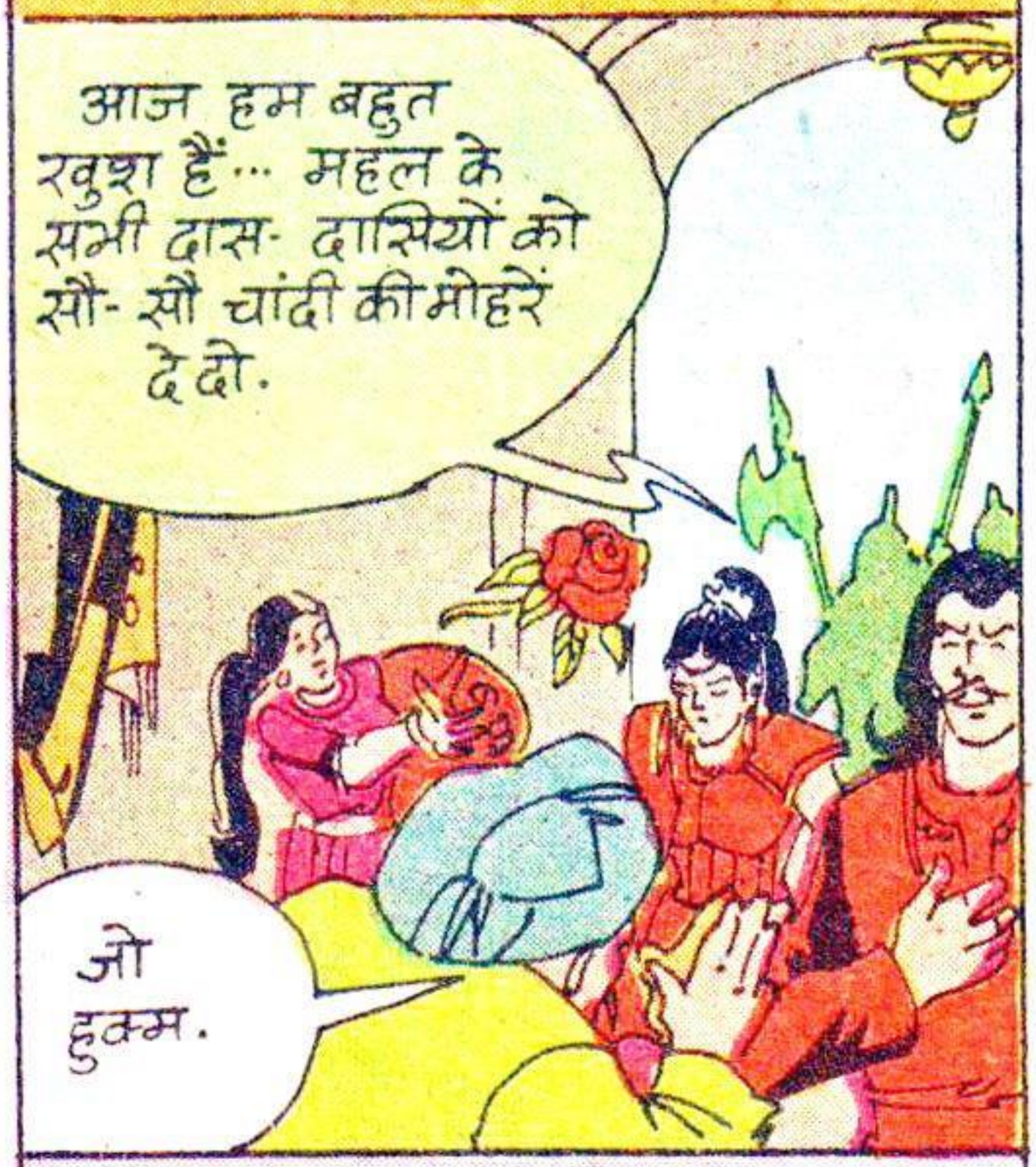

नई रानी का स्वागत परम्परागत तरीके से ही हुआ-

लेकिन जैसे ही खजांची माल खाने पर पहुंचा... चीख... पड़ा...

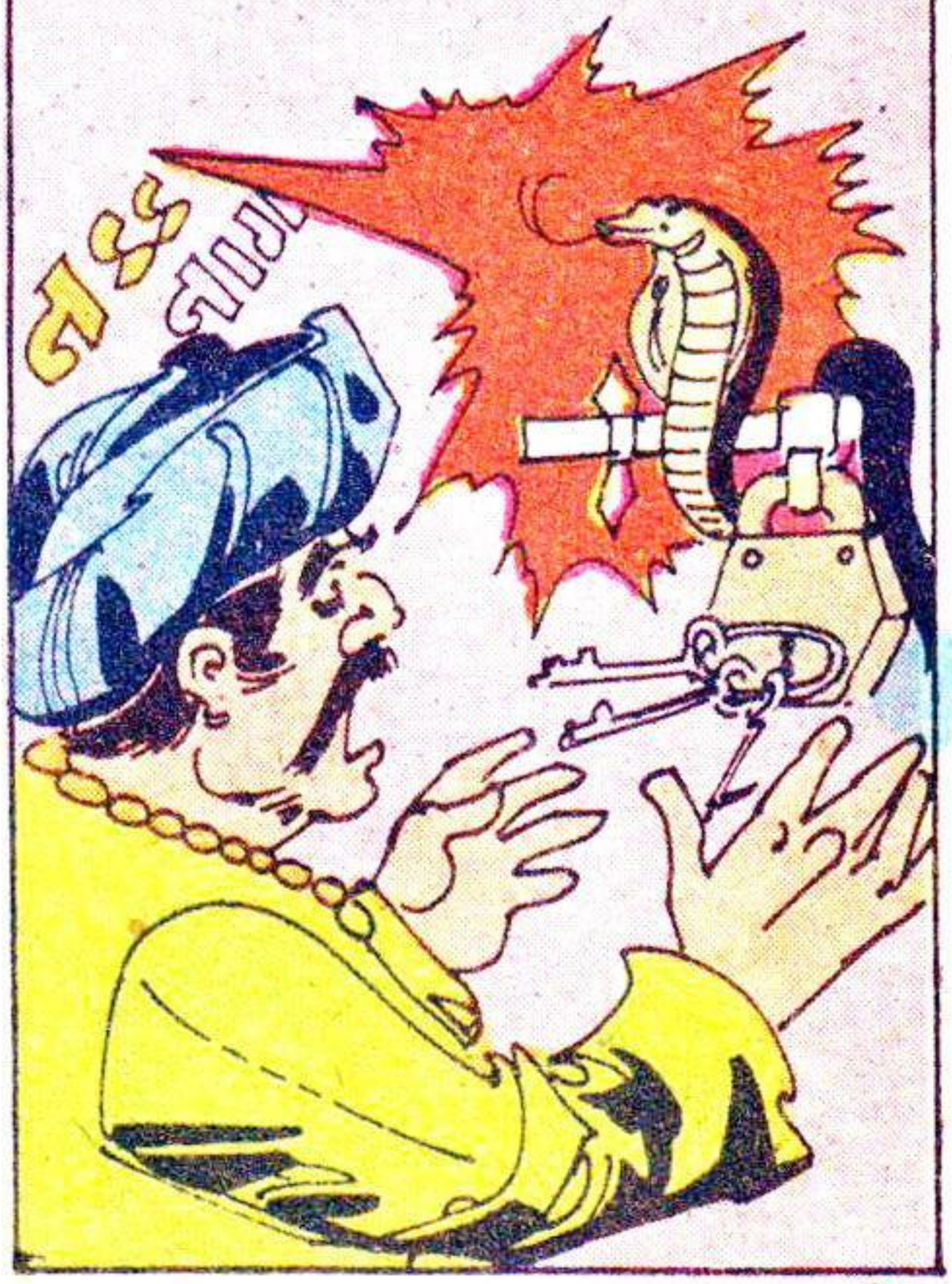

बकवास! हम देखते हैं कौन सा नाग है वह!

लेकिन वहां कोई नाग न था.

तुमने झूठ बोलकर हमें परेशान किया. अब मरने के लिए तैयार हो जा डरपोक चूहे.

अचानक -

न... नहीं नाग... क... कैसे... तलवार पर... उफ् फ... फेंकू ... इसे...

उसने अपनी तलवार पर भयानक काले नाग को लिपटे देखा- तो उसके रोंगटे खड़े हो गए--

इनाम तो बंटता रहेगा महाराज. आप रनिवास में चलिए... कहां कोई प्रतीक्षा में आज पलकें बिछाए बैठी है.

स...सच!

लेकिन इससे पहले-

अरे! यह क्या कर रही हो?

त...तुम महाबली... मैं सपना तो नहीं देख रही न... तुम सचमुच मेरे शाका ही हो न?

अब जरा मेरी बात सुनो...

फुसफुसाहट!

कुछ ही देर बाद द्वार खुला और फूलों से महकते कमरे में राजा प्रतापसिंह दाखिल हुआ.

अ... हा... कैसी सिमटी हुई गुड़िया सी बनी बैठी है मेरी रानी.

लेकिन जैसे ही वह सेज पर बैठा-

स... सांप...!

दुल्हन ने तुरन्त नाग उठाया और अपनी झोली में रख दिया.

क...क्या...त...तुम्हें डर नहीं लगता उससे... तुमने उसे बच्चे की तरह उठा लिया. फेंक दो इसे!

हुं...हुं... नहीं...

क्या... इंकार! विक्रमगढ़ के नरेश की बात मानने से इंकार... इसकी सजा मौत है समझी चित्रांगना.

और उसने तलवार उठाई- मगर तुरन्त ही चीख पड़ा-

आssssह... सांप...य...यहां भी सांप!

धांय

लेकिन सुराही में से पानी नहीं बल्कि नाग निकला-

यानि कि बात साफ हो गई है- हर तरफ मौत है- जिससे तुम बच नहीं सकोगे.

हर जगह नाग...पानी में, हथियारों पर, और फूलों की सेज पर भी...

म... महाबली शाका...
त... तुम यहां... दुल्हन बन कर आ गए...
असम्भव .. मैंने रास्ते में हजार बार चित्रांगना का चेहरा देखा था...

त...
त... तुम कौन हो ?

हां...
मैं हूं...!

यह मर्दानी आवाज किसकी थी. मेरे और तेरे सिवा क्या कोई और भी है यहां.

... जिसे देखने के बाद तेरे वंश का कोई दूसरा वारिस इतना धूर्त मक्कार और शैतान नहीं बनेगा.

और यही बात अब तेरी मौत का वह भयानक मंजर बनेगी...

मैं निहत्थे पर वार नहीं करता - तलवार उठा ले प्रताप-सिंह !

अ... हां... अब ठ... ठीक... है.

साहस करके प्रतापसिंह ने शाका पर वार किया -

ले तूने मेरे बाजू पर प्रहार किया - बदले में तेरा एक बाजू गया.

फिर तो क्रोध की आग में जलते शाका ने प्रतापसिंह के दोनो पैर तथा दोनों हाथ काट डाले - उसका चेहरा भयानक बनाने के लिए उसकी नाक तथा होंठ भी काट डाले -

आह!

बस... अब बिदा... राजा प्रतापसिंह. तुमने चित्रांगना का एक हजार बार मुंह देखा था न... मैं चाहता तो तुम्हारे एक हजार टुकड़े कर डालता.

... लेकिन यह सजा तुम्हारे लिए उससे भयानक साबित होगी.

आओ चित्रांगना
अब हम चलें...!

समाप्त

और फिर राजकुमारी चित्रांगना को अपने घोड़े पर सवार करके वह वापस गरुड़गढ़ की ओर लौट चला. जहां आज ही के समारोह में उन्हें एक दूसरे का जीवन साथी बनकर हमेशा के लिए एक हो जाना था.

DIAMOND POCKET BOOKS

BOOKS YOU WILL LOVE TO READ

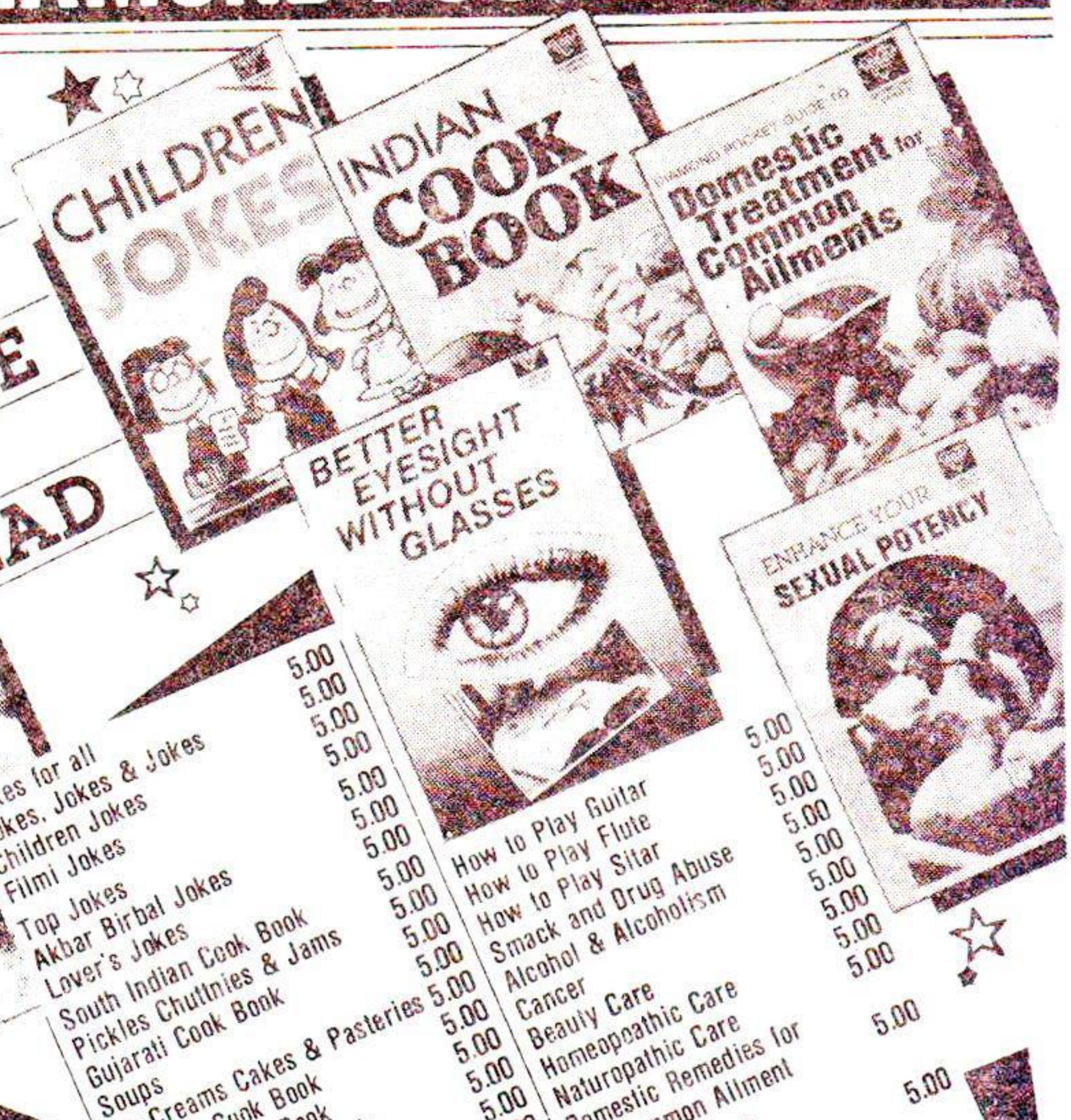

MINI BOOKS

- Pregnancy & Child Care 5.00
- All About Female Sexual Disorder 5.00
- Sex for Adolescents 5.00
- Sex for Young Couples 5.00
- Enhance Your Sexual Potency 5.00
- 101 Questions About Sex & Their Answers 5.00
- Professional Jokes 5.00
- Party Jokes 5.00
- Selected Jokes 5.00
- Midnight Jokes 5.00
- Modern Jokes 5.00
- Jokes for all 5.00
- Jokes, Jokes & Jokes 5.00
- Children Jokes 5.00
- Filmi Jokes 5.00
- Top Jokes 5.00
- Akbar Birbal Jokes 5.00
- Lover's Jokes 5.00
- South Indian Cook Book 5.00
- Pickles Chutnies & Jams 5.00
- Gujarati Cook Book 5.00
- Soups 5.00
- Ice Creams Cakes & Pasteries 5.00
- Chinese Cook Book 5.00
- Punjabi Cook Book 5.00
- Vegetarian Cook Book 5.00
- Non Vegetarian Cook Book 5.00
- Mughalai Cook Book 5.00
- Indian Cook Book 5.00
- Bengali Sweets 5.00
- Breakfast Specialities 5.00
- Shed Weight Add Life And Inches 5.00
- Judo Kungfu 5.00
- Judo Karate 5.00
- How to Play Cricket 5.00
- How to Play Hockey 5.00
- How to Play Football 5.00
- How to Play Tennis 5.00
- How to Play Badminton 5.00
- How to Play Tabla 5.00
- How to Play Harmonium 5.00
- How to Play Guitar 5.00
- How to Play Flute 5.00
- How to Play Sitar 5.00
- Smack and Drug Abuse 5.00
- Alcohol & Alcoholism 5.00
- Cancer 5.00
- Beauty Care 5.00
- Homeopathic Care 5.00
- Naturopathic Care 5.00
- Domestic Remedies for Common Ailment 5.00
- Better Eyesight Without Glasses 5.00
- Mental Tension And Its Redemption 5.00
- Ayurvedic Treatment 5.00
- Heart Ailements & Their Remedies 5.00
- Public Speaking 5.00
- Gymnastics 5.00
- Boxing 5.00
- Diamond Guide to Astrology 5.00
- Diamond Guide to Palmistry 5.00

DIAMOND POCKET BOOKS
2715, Darya Ganj, New Delhi-110002.

डायमंड कामिक्स में

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी और साबू का नया हंगामा

चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़

खूंखार राका फिर आ गया है। उसने वैद्यराज चक्रमाचार्य की अद्भुत दवाई पी रखी है, जिससे वह मर नहीं सकता। उसके अत्याचार और तबाही से चारों तरफ कोहराम मचा है। कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और शक्तिशाली साबू के सामने राका एक चुनौती बनकर खड़ा है। इस भिडंत में कौन जीता? कौन हारा? पढ़िए एक्शन से भरपूर इस नयी कॉमिक्स में।

400वां अंक

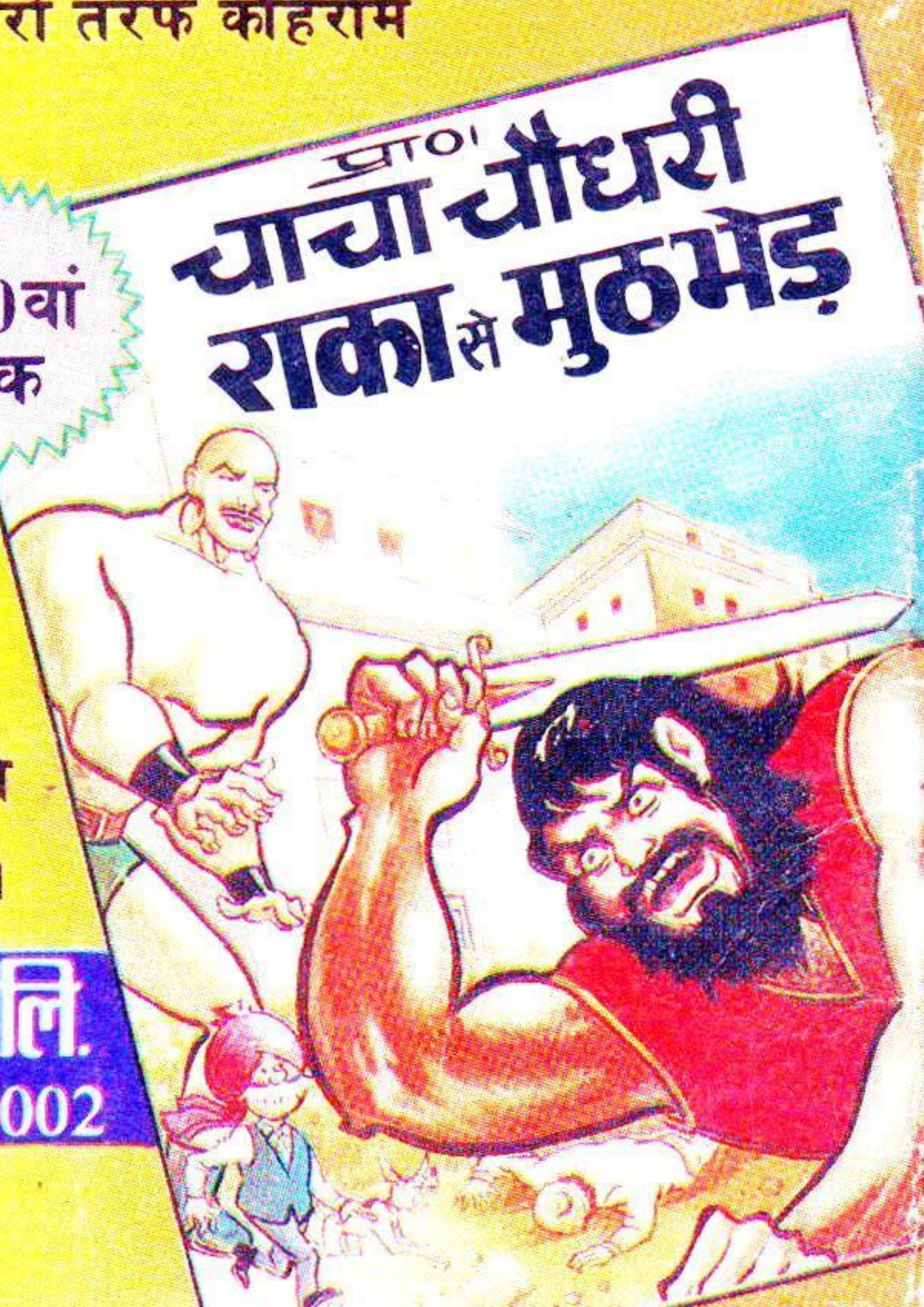

डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Presented by @sdch_club

Join us on telegram

t.me/comics_hindi

t.me/raj_comics_unofficial

t.me/tvseries_4u

t.me/video_short

t.me/joinchat/HOrD4ojPhi9YCoZU

t.me/joinchat/AAAAAFQGITMkD8puJ1QKrw